VAISESIKA - ACTION

वैशेषिक - कर्म

By- Dr. Arun Kumar Sinha
Asso. Professor, Philosophy Department
Raja Singh College, Siwan
(For Part- 1 Hons./Subs. Students)

द्रव्य के मूल गतिशील धर्मों का परिभाषिक नाम ही वैशेषिक दर्शन में कर्म है।कर्म गुण से भिन्न है,कर्म सक्रिय होता है जबकि गुण निष्क्रिय होता है।गुण द्रव्य में बना रहता है जबकि कर्म कुछ समय बाद नष्ट हो जाता है।कर्म निर्गुण है ,द्रव्य आश्रित रहता है, कर्म में नहीं।कर्म के लक्षण को बतलाते हुए वैशेषिक दर्शन में कहा गया है कि - कर्म वह है जो द्रव्य में समवेत होता है, गुण से भिन्न होता है और संयोग बिभाग का साक्षात कारण होता है।इसे और स्पष्ट ढंग से इस उदाहरण के द्वारा समझा जा सकता है - एक गोला जिसमें गति है वह गति उस गोले(द्रव्य) में समवेत है।वह गुण नहीं है क्योंकि गुण टिकाऊ होता है।गोला जमीन पर पड़ा था, जब उसमें गति हुई तब उसका जमीन से बिभाग हो गया।गोला छत पर गिरा, गति के कारण गोले का छत से संयोग हो गया।इस तरह यह कहा जा सकता है कि गति यानी कर्म संयोग और बिभाग का असमवायी कारण है।

कर्म द्रव्य से भिन्न है द्रव्य की सत्ता के लिये किसी वस्तु की अपेक्षा नहींहै, वह स्वतंत्र है जबकि इसके विपरीत कर्म परतंत्र है।कर्म को पदार्थ कहा जाता है क्योंकि इसके बारे में सोचा जा सकता है, इसका नामकरण भी सम्भव है।गुण को पदार्थ के श्रेणी में रखने के लिए जिस दृश्टिकोण को अपनाया जाता है वही दृष्टिकोण कर्म के लिए भी पदार्थ के श्रेणी में रखने के लिए लागू होता है।

कर्म सभी द्रव्यों में नहीं पाया जाताहै, जैसे - आकाश, काल, आत्मा, मन आदि । चूँकि इन द्रव्यों का स्थान परिवर्तन नहीं हो सकता, वे गतिशील नहीं हैं, इसलिए इन द्रव्यों में कर्म का अभाव रहता है।

कर्म गुण से शून्य है,यह निर्गुण है।कर्म गतिशील रूप है द्रव्य का पर गुण निष्क्रिय रूप है द्रव्य का।

वैशेषिक दर्शन में कर्म के होने के लिय कुछ उपाधियों की भी चर्चा है,जैसे- 1 भारी द्रव्य पृथ्वी की ओर गिरते हैं अतः भारीपन कर्म का कारण होता है 2 तरल पदार्थों में गति दिख पड़ती है जिसके कारण जल में गति है 3भावना के कारण जीवात्माओं में क्रियाशीलता

होती है 4 संयोग के कारण भी गति का आविर्भाव होता है।छत से फेंके जाने वाली गेंद का संयोग जब पृथ्वी से होता है तो कर्म होता है।

वैशेषिक दर्शन के अनुसार कर्म पाँच प्रकार के होते हैं : -

1 उत्क्षेपण(Throwing Upward)
2 अवक्षेपण(Downward Movement)
3 आकुंचन(Contraction)
4 प्रसारण(Expansion)
5 गमन(Locomotion)

वस्तु जो की किसी कर्म के द्वारा ऊर्ध्व दिशा की ओर चलती है उसे उत्क्षेपण कर्म की श्रेणी में रखा जाता है।

किसी वस्तु को ऊपर की ओर उछालना ऊपर वस्तु का जाना तत्पश्चात नीचे की ओर आना तब उसे अध: दिशा की ओर आना कहते हैं। यह कर्म और अवक्षेपण कर्म कहा जाता है।

उत्क्षेपण और अवक्षेपण दोनों कर्म एक दूसरे का विरोध करते हैं जब किसी कर्म से कोई वस्तु सिकुड़ जाती है तो उस कर्म को आकुंचन कर्म कहते हैं जैसे हाथ पैर मोड़ना।

शीतकाल में किसी वस्तु का फैलाव या विस्तार होता है या मनुष्य अपने हाथ पैर को प्राय: सिकुड़ा लेते हैं अर्थात मोड़ लेते हैं तब वह कर्म प्रसार या फैलाव की स्थिति में होता है अत: उसे प्रसारण कर्म कहेंगे ,जैसे हाथ पैर हिलाना।

वह कर्म जिसके द्वारा स्थान परिवर्तन होता है, गमन कर्म कहा जाता है। जैसे - किसी लंबी दौड़ में हिस्सा लेना या दौड़ना आदि। समस्त कर्मों की मूल में गतिशीलता है इसलिए कर्म की विशेषता गतिमान होने से जुड़ी है।